OM 21 DELHI_Page 1 and 2 14/01/2015 07:53 Page 3

संस्कार परिवर्तन कैसे करें?

हमारा सारा पुरुषार्थ है संस्कार बदलने का। ज्ञान में आने से पहले हमारे संस्कार थे आसुरी संस्कार, तमोगुणी संस्कार, देह-अभिमान से पैदा होने वाले संस्कार। जन्म-जन्मान्तर हम देह-अभिमान के वशीभूत हो कर जो कर्म करते आये थे उसी से हमारे खराब संस्कार हो चुके थे। उससे हम दु:खी और अशान्त थे। दु:ख और अशान्ति क्यों थी? हमारे कर्म अच्छे नहीं थे। कर्म क्यों अच्छे नहीं थे? क्योंकि हमारे संस्कार अच्छे नहीं थे। वो संस्कार हमें मजबूर करके ऐसे कर्म कराते थे। बाबा ने आकर हमें बताया कि बच्चे, ये संस्कार आपके नहीं हैं, आपके संस्कार सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण... हैं। बाबा ने कहा, ज्ञान, योग से पुराने संस्कारों को बदल कर फिर से अपने असली संस्कारों को ला सकते हो। बाबा ने कहा है कि ये देह-अभिमान के संस्कार अपने स्वाभाविक संस्कार नहीं हैं, हमारे स्वाभाविक संस्कार हैं पवित्रता और शान्ति। कई लोग कहते हैं, भई ये हमारी नेचर (स्वभाव) है। बाबा कहते हैं, ये आपकी नेचर नहीं हैं, देह-अभिमान में आने के बाद आपने इनको अपनाया है। अभी इन संस्कारों को बदलना है और अपने स्वाभाविक संस्कारों को भरना है। पुराने संस्कारों को बदलने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना है? बाबा ने तो अथाह युक्तियाँ और ज्ञान के बिन्दु दिये हैं लेकिन मैं चार-पाँच बातें बताऊंगा जिनको रोज़ अपने में देखना है।

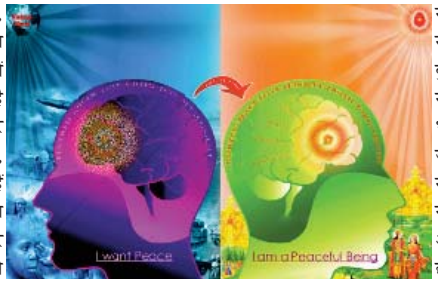

1. बाबा कहते हैं बच्चे, नॉलेजफुल (ज्ञानपूर्ण) बनो। अगर हमें पता है कि रास्ते में खड्डा है, कांटे हैं, चट्टानें हैं तो हमें सम्भलकर चलना होता है। अगर हम जानते हुए संभल कर नहीं चलते हैं तो इसका अर्थ हुआ कि नॉलेजफुल नहीं हैं। अगर हम समझते हैं कि यह फलाना व्यक्ति लड़ाकू है, झगड़ालु है तो उससे हमें सम्भलकर चलना होगा, उसके साथ बात भी बहुत सम्भल कर करनी होगी। अगर हम उसके स्वभाव को, संस्कार को समझते हुए भी उसकी तरह करते रहे तो हम जानते हुए अनजान, ज्ञानी होते हुए अज्ञानी हो गये। इसीलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, नॉलेजफुल बनो। अपने को और बाप को, जो हैं, जैसे हैं वैसे जानते हो, वैसे अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को भी जो है, जैसा है वैसे जानो और उस हिसाब से चलो। जब आप समझते हुए भी, जानते हुए भी समझकर नहीं चलते हो, तो अपने आपको धोखा देते हो और ठोकरें भी खुद को खानी पड़ती हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, नॉलेजफुल बनो। नॉलेजफुल बनने से अपने आपको सुरक्षित रखोगे, सबके संस्कारों को जानकर उनके साथ अच्छा व्यवहार करते प्रेम और शान्ति से रहोगे।

2. बाबा कहते हैं, अपना संस्कार परिवर्तन करने के लिए सब पुरुषार्थ कर रहे हैं। अन्त तक सब पुरुषार्थ करते रहेंगे। सम्पूर्ण तो अन्त में बनेंगे। इसीलिए यह नहीं सोचो कि यह तो बड़ा ज्ञानी है और इसमें ही इतनी कमी-कमज़ोरी है! ऐसे सोचो - सब पुरुषार्थ कर रहे हैं, वे भी अपने संस्कारों को बदलने की कोशिश कर रहे हैं। किसी से सम्पूर्णता की आशा नहीं रखो। इसलिए आप यह समझो कि मैं विश्व कल्याणी हूँ। सारा विश्व तो बदला नहीं है, मुझे भी विश्व कल्याण का कार्य करना है। अगर आपके सम्पर्क में अथवा सम्बन्ध में कोई खराब संस्कार वाला आया तो उससे दु:खी और तंग होने के बदले आप यह समझो अथवा अपने में यह परिवर्तन करो कि बाबा ने मुझे विश्व कल्याणी का टाइटिल (स्वमान) दिया है, मुझे इसका भी कल्याण करना है। वह कितना भी खराब संस्कार वाला हो, उससे परेशान, दु:खी होने के बदले यह सोचो कि बाबा ने इसे मेरे सम्पर्क में इसीलिए भेजा है कि मैं इसका कल्याण करूँ, इसका संस्कार बदलूँ।

3. बाबा कहते हैं कि सतयुग में हरेक पद अलग-अलग होगा, नम्बरवार होगा। क्यों होगा? क्योंकि संगमयुग में हरेक ने अलग-अलग पुरुषार्थ किया है, नम्बरवार पुरूषार्थ किया है तथा अन्त में उनकी अलग-अलग स्थिति हुई है। इसलिए सबको संस्कारों के साथ चलना पड़ेगा और चलना चाहिए। बाबा कहते हैं, सतयुग में आपको एक-दूसरे से अथाह सम्मान मिलेगा, सबसे सत्कार मिलेगा। यहाँ तक कि प्रकृति, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सब आपको सत्कार देंगे, कोई किसी को दु:ख नहीं देंगे। सत्कार वहाँ कैसे मिलेगा? किस आधार पर मिलेगा? यहाँ दोगे तो वहाँ मिलेगा, यह नियम है कि ''जो करोगे वही पाओगे''। यहाँ जितना-जितना दूसरों को सत्कार और सम्मान देंगे उतना वहाँ आपको सत्कार और सम्मान मिलेगा। आपके पास कोई प्यासा व्यक्ति आया है उसको पीने के लिए पानी चाहिए परन्तु आपने उसको पानी के बजाय राजोचित भोज दिया तो क्या वो सन्तुष्ट होगा? कभी नहीं। उसी प्रकार, आपसे कोई सम्मान तथा सत्कार चाह रहा है, आपको क्या करना पड़ेगा? भले आपको वह अपमानित कर रहा है लेकिन आप उसको सत्कार और सम्मान दे कर उसकी प्यास बुझा दो। भविष्य के लिए आपके खाते में यह सम्मान और सत्कार जमा हो जायेगा। आप उसको जानते हैं, वो कैसा आदमी है, फिर भी वह अपने को बहुत बडा समझ कर आप से सम्मान माँग रहा है अथवा चाह रहा है। इसलिए उसके बारे में सब कुछ आप जानते हुए भी उसको सम्मान दो क्योंकि वह सम्मान का भूखा है। तब ही सतयुग में सर्व जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सब आपको सत्कार देंगे, कोई किसी को दु:ख नहीं देंगे। यदि सम्मान चाहते हो तो अभी सबको सम्मान दो। भले, छोटे-से छोटा व्यक्ति भी हो, उसको सम्मान दो।

4. बाबा कहते हैं, सबको सहयोग दो। वह व्यक्ति आपको सहयोग दे न दे लेकिन आप उसको सहयोग ज़रूर दो क्योंकि वह भी ईश्वर का बच्चा है, वह भी जो कर रहा है वह ईश्वरीय कार्य है। ईश्वर हमारा मात-पिता है। वो कार्य मैं करूँ अथवा वह करे, है तो हम दोनों के पिता परमात्मा का कार्य इसलिए हरेक बाबा के बच्चे को उसके ईश्वरीय कार्य में आप पूरा सहयोग दो। संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन होता है। इसलिए संस्कार परिवर्तन करने के लिए तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ता है। अपने में कौन-से पुराने संस्कार हैं उनकी चेकिंग करो और अपने जो मूल संस्कार हैं उनको जानकर अपने में भरते चलो।

5. भक्तिमार्ग में किसी में कोई कड़ा संस्कार है तो उसको निकालने के लिए क्या करते हैं? व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं, प्रण करते हैं भगवान के सामने। भक्तों की तरह हमें उपवास और हठ नहीं करना है, परन्तु हमें दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे उस संस्कार का प्रयोग नहीं करना है और उस कड़े संस्कार को आप बाबा को अर्पित कर दो, दान कर दो। इस प्रकार, तीव्र पुरुषार्थ से ही अपने कड़े संस्कारों को मिटा सकते हैं और दैवी संस्कारों को अपना सकते हैं।

वणी-महा.। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् नव निर्वाचित विधायक संजीव रेड्डी बोधकुरवर से बातचीत करते हुए ब्र.कु. कुंदा। साथ हैं वीरभद्र पाटिल, ब्र.कु. मोहितकर तथा अन्य।

खम्भात-गुज.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए विधायक संजय पटेल, लायन्स क्लब प्रेसीडेंट स्नेहल बेन सोनी, लायन्स क्लब प्रेसीडेंट डॉ. सी.के. ब्रह्मभट्ट, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. बिपिन, ब्र.कु. समिता तथा ब्र.कु. किरण।

अहमदनगर। सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी को '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' की जानकारी देने के पश्चात् सत्कर्मों का फोल्डर भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक हरके।

बरवाला-हरियाणा। सड़क सुरक्षा अभियान के उद्घाटन पश्चात् एस.डी.एम. प्रशांत अट्कान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इन्द्रा। साथ हैं प्रसिद्ध समाजसेवी नरेन्द्र चुग तथा अन्य।

वीरगंज-नेपाल। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' कार्यक्रम के दौरान परमात्म स्मृति में युवा व खेल मंत्री पुरुषोत्तम पॉडेल, श्रीमती प्रमिला सुबेदी पॉडेल, सांसद राधेचन्द्र यादव, नेशनल न्यूज रिपोर्टर शितल महतो, ब्र.कु. रविना, ब्र.कु. रामसिंह, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

कैनेडा-यू.एस.ए.। टोरोन्टो में भारत के काउंसिल जेनरल अखिलेश शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहिनी।

हरिद्वार। आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए साध्वी महन्त मुक्ता गिरी जी, श्रीविद्याधाम कनखल। साथ हैं साध्वी मैत्रियानंद गिरी तथा ब्र.कु. मीना।

ऋषिकेश। परमार्थ निकेतन में अंतर्राष्ट्रीय महिला अधिकारियों की बैठक का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. बिन्नी तथा विभिन्न देशों की महिला अधिकारी गण।